ऐसे गरज़ रहे हनुमान

ऐसे गरज़ रहे हनुमान

ऐसे, गरज़ रहे हनुमान,
कि थर थर, काँप रही लंका ॥
कि थर थर, काँप रही लंका,
कि थर थर, काँप रही लंका ॥
ऐसे, गरज़ रहे हनुमान, कि थर थर...

कहे मन्दोदरी, सुनो पिया जी, मेरे मन शंका ॥
उनकी, जानकी, वापस दे दो ।
अमर, रहे लंका,
ऐसे, गरज़ रहे हनुमान, कि थर थर...

एक लख पूत, सवा लख नाती, काहे की चिन्ता ॥
मेघ, नाथ से, पुत्र हमारे ।
कुम्भ, कर्ण भईया,
ऐसे, गरज़ रहे हनुमान, कि थर थर...

पवन देव मेरी, भरे हाज़री, इन्द्र करे सेवा ॥
अग्नि, देव मेरी, तपे रसोई ।
ब्रह्मा, देव सेवा,
ऐसे, गरज़ रहे हनुमान, कि थर थर...

एक वानर, लंका में आया, उज़ड़ गई बगिया ॥
पेड़, उखाड़े, पहरी मारे ।
फूंक, दई लंका,
ऐसे, गरज़ रहे हनुमान, कि थर थर...
अपलोडर- अनिलरामूर्तिभोपाल

https://bhajanganga.com/bhajan/lyrics/id/36272/title/aise-garaz-rahe-hanuman

अपने Android मोबाइल पर BhajanGanga App डाउनलोड करें और भजनों का आनंद ले |